

● सुनो, समझो और सुनाओ :

४. संदेश

-पुष्पा अशोककुमार दुबे

जन्म : १ जुलाई १९६० मुंबई (महाराष्ट्र) **परिचय :** समसामयिक विषयों एवं विद्यालयीन गतिविधियों में विशेष अभिरुचि । आप राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापिका हैं । नए-नए उपक्रमों में सहभागिता निभाने वाली समस्त विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं । प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखिका ने पत्रों के प्रकारों पर प्रकाश डाला है ।



जरा सोचो चर्चा करो

अगर दूरध्वनि एवं भ्रमणध्वनि न होते तो



गुरु जी : (कक्षा में प्रवेश करते ही) नए वर्ष की शुभकामनाएँ, बच्चो ! तुम सबका नया साल सुखमय और आनंदमय हो । सभी यशस्वी हो ।

सभी विद्यार्थी : धन्यवाद गुरु जी । आपको भी नए वर्ष की बहुत-बहुत बधाई ।

गुरु जी : अच्छा यह बताओ कि नए वर्ष के उपलक्ष्य में तुम्हें किसी का पत्र मिला क्या ? (सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं । खुसर-फुसर करने लगते हैं ।)

उज्ज्वल : गुरु जी, मेरे भाई को नियुक्ति पत्र आया था । उसे रेलवे में नौकरी मिल गई है । बधाई का तो नहीं देखा ।

प्रवर : गुरु जी, मेरे पिता जी को पत्र द्वारा पदोन्नति की सूचना प्राप्त हुई । उनका प्रमोशन हो गया है ।

सुव्रता : अरे वाह ! उज्ज्वल की तो चाँदी हो गई । गुरु जी ! उसे कहिए कि वह हम सब को पार्टी दे । (उज्ज्वल झुककर सुव्रता को अँगूठा दिखाता है ।)

मुक्ता : गुरु जी मेरी मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है ।

गुरु जी : शाबाश बच्चो ! तुम सबने देखा कि प्रवर के घर पदोन्नति पत्र, उज्ज्वल के यहाँ नियुक्ति का पत्र और मुक्ता की मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है । क्या तुम जानते हो कि पत्र कितने प्रकार के होते हैं ?

मुक्ता : गुरु जी निमंत्रण पत्र, नियुक्ति पत्र, पदोन्नति पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! इन पत्रों के बारे में तो हम अभी-अभी चर्चा कर ही रहे थे ।

उज्ज्वल : गुरु जी, वही सुनकर तो यह नकलची फटाफट बता दी ।

गुरु जी : प्रवर ! बहुत बुरी बात । ऐसा नहीं बोलते । तुम क्यों नहीं बोले ? चलो ! मुक्ता से क्षमा माँगो ।

उज्ज्वल : सारी मुक्ता ! मुझे क्षमा कर दो ।

मुक्ता : जाओ मैंने तुम्हें माफ किया ।

अध्ययन : गुरु जी, आप ही बताएँ । हमारे ध्यान में तो नहीं आ रहा है ।

गुरु जी : सोचो-सोचो । (कुछ बच्चे सर खुजलाने लगते हैं । कुछ सिर नीचे कर लेते हैं ।) प्रवर, तुम्हारे भाई को नियुक्ति पत्र मिला है । पत्र मिलने के पहले उसने कुछ तो किया होगा ?

अध्ययन : प्रार्थना पत्र दिया होगा ।

गुरु जी : शाबाश ! तुम्हारी बुद्धि चलने लगी है । (सभी विद्यार्थी हँस पड़ते हैं ।)



❑ विद्यार्थियों से संवाद का वाचन कराएँ । कक्षा में संवाद का नाट्यीकरण कराएँ । पत्रों के प्रकारों एवं उनकी विषय वस्तु पर चर्चा कराएँ । पत्र लेखन के प्रारूप पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार पत्र लेखन के लिए प्रेरित करें ।



सुनो तो जरा

दक्खिनी हिंदी की कोई कविता सुनो और सुनाओ ।



गुरु जी

: रत्ना ! खड़ी हो जाओ । क्या बात है ? क्या सोच रही हो ?

रत्ना

: गुरु जी ! मैं सोच रही थी कि पाँचवीं कक्षा में हम लोगों ने 'शुभकामना कार्ड' बनाना सीखा था । मैंने मुक्ता को दीपावली पर बधाई पत्र भेजा था । वह भी तो एक प्रकार हुआ न ?

गुरु जी

: बिलकुल सही रत्ना । शाबाश ! तुम्हारी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है । शाबाश ! शाबाश !

अरुण

: गुरु जी ! मेरी मम्मी बताती हैं कि जब टेलीफोन/मोबाइल नहीं थे तो उस समय हाल-चाल लेने के लिए चिट्ठी लिखते थे ।

गुरु जी

: हाँ ! पहले कुशल-क्षेम पूछने के लिए पत्र व्यवहार ही प्रमुख साधन था ।

सौम्या

: गुरु जी मेरे भाई ने अपने लिए बहुत सी पुस्तकें वी.पी.से मँगाई थी । उसमें एक पुस्तक फटी हुई थी । अब उसे क्या करना चाहिए ?

गुरु जी

: सौम्या, अपने भाई से कहो कि वह प्रकाशक को शिकायती पत्र लिखे और पूरी जानकारी दे ।

प्रवर

: गुरु जी, इस तरह तो यह व्यवसाय संबंधी काम हो गया ।

गुरु जी

: वाह प्रवर ! तुम इस प्रश्न से हमें पत्र के प्रकार के संकलन की तरफ ले आए हो ? ऐसे पत्र जिसमें व्यापारिक बातें, वस्तु/माल की आपूर्ति, इनसे संबंधी शिकायती बातें हों उन्हें व्यावसायिक पत्र कहा जाता है ।

अध्ययन

: गुरु जी, वे कुशल-क्षेम वाले पत्र क्या हैं ?

गुरु जी

: बच्चो ! ऐसे पत्र जिसमें पारिवारिक बातें, हाल-चाल, शुभकामना, संदेश देने आदि की बातें होती हैं, ऐसे पत्र व्यक्तिगत पत्र कहे जाते हैं ।

मुक्ता

: गुरु जी ! फिर तो निमंत्रण पत्र भी एक प्रकार हुआ न !

गुरु जी

: हाँ ! जन्मदिन, विवाह, शुभकार्य आदि के लिए जब हम अपने मित्रों-संबंधियों को पत्र देकर बुलाते हैं तो इसे निमंत्रण पत्र कहा जाता है ।

प्रवर

: गुरु जी ! मेरे भाई ने प्रार्थना पत्र भेजा था । उसका कौन-सा प्रकार हुआ ?

गुरु जी

: अधिकारी, प्रशासक, संस्थाप्रधान आदि से जब हम कोई पत्राचार करते हैं तो उसे आवेदन पत्र कहते हैं ।

सौम्या

: गुरु जी ! और कोई शेष है क्या ? कोई छूट तो नहीं गया ?

गुरु जी

: हाँ सौम्या । राज्यशासन, केंद्रीय शासन के शासकीय, कार्यालयीन पत्रों को सरकारी पत्र कहते हैं । अच्छा, अब बताओ हमने कितने प्रकार के पत्रों के बारे जानकारी प्राप्त की ?

सभी एक साथ: व्यक्तिगत पत्र, निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी पत्र, व्यावसायिक पत्र ।

गुरु जी

: शाबाश ! लेकिन अब इन पत्रों के नए रूप भी आ गए हैं । इन नए पत्रों के नाम कौन बताएगा ? (सब सोचने लगते हैं । कोई उत्तर नहीं देता । सब शांत हो जाते हैं ।)

गुरु जी

: अरे भाई ! एस. एम. एस., ई-मेल, फैक्स तो हम अक्सर ही करते हैं । चलो, आज हमने सब पत्रों के प्रकार जानें । अब तुम भी पत्रों के प्रारूप और इसके अंगों के बारे में जानकारी संकलित करना । अगली बार हम इसकी जानकारी पढ़ेंगे । (सभी बच्चे एक साथ- धन्यवाद गुरु जी)



□ विविध प्रकार के पत्रों एवं महापुरुषों के पत्र पढ़ने एवं उनके संग्रह करने के लिए प्रेरित करें । डाक विभाग से कौन-कौन-से पत्र आते हैं, पूछें । पत्र लेखन की परंपरा समाप्त हो रही है, कारणों पर चर्चा करें । 'कुरियर सेवा' समझाएँ ।



मैंने समझा

शब्द वाटिका



नए शब्द

प्रमोशन = पदोन्नति

नकलची = नकल करने वाला

मुहावरे

चाँदी होना = बड़ा लाभ होना

अँगूठा दिखाना = चिढ़ाना



स्वयं अध्ययन

अपने मुख्याध्यापक/मुख्याध्यापिका को छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र लिखो।



वाचन जगत से

अंतरजाल/पुस्तक से भारतीय डाक सेवा का इतिहास ज्ञात करो :

पुरातन सेवाएँ

आधुनिक सेवाएँ

विकास



अध्ययन कौशल

भारत के औद्योगिक मानचित्र से ज्ञात करो कि वस्त्रोद्योग की मिलें कहाँ-कहाँ हैं, सूची बनाओ :

राज्य

निर्यात

वस्त्रों के प्रकार



विचार मंथन

पत्र बोलते हैं, भावों के मर्म खोलते हैं।



बताओ तो सही

सुवचन, उद्धरणों का संकलन करो और संबंधित आशय बताओ।



मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन तैयार करो।



खोजबीन

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक के संदेश वाहकों के नाम ढूँढ़ो और बताओ।

* पाठ के आधार पर शब्द पहेली से पत्र के प्रकार ढूँढो और लिखो :

व्य	पा	नि	आ	ई	मे
व्या	क्ति	रि	मं	वे	ल
व	यि	ग	त्र	फै	द
सा	क	ण	त	क्स	न

= =
 = =
 = =
 = =
 = =



भाषा की ओर

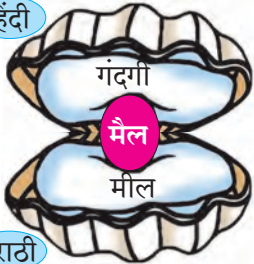
दिए गए हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखो और दोनों शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके लिखो तथा इसी तरह के अन्य शब्द ढूँढो ।



सदैव ध्यान में रखो

महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्र हमारी साहित्यिक धरोहर हैं ।

हिंदी



१. मेरे मन में कोई
गंदगी नहीं है ।
२. मैं आज चार
मील पैदल चला ।



१.
.....
२.
.....

मराठी



१.
.....
२.
.....



१.
.....
२.
.....



१.
.....
२.
.....



१.
.....
२.
.....



१.
.....
२.
.....



१.
.....
२.
.....